दुधारु पशुआं में अधिक दुध उत्पादन क्षमता बढाने के उपाय

डा0 राज किशोर शर्मा
सहायक प्राध्यापक
परजीवी विज्ञान विभाग
बिहार पशु चिकित्सा महाविद्यालय

भारत में दुध उत्पादन मुख्य रुप से गाय/भैंस से होती है। ये 80 प्रतिशत दुध उत्पादन करती है। हमारा बिहार एक कृषि प्रधान राज्य है यहॉ के किसानों/पशुपालकों के आर्थिक लाभ में दूध उत्पादन कर बिक्रय कर आर्थिक लाभ प्राप्त करना विशेष महत्व रखती है किन्तु ये तभी संभंव है जब उन्नत नस्ल के दुधारु पशुओं का चुनाव करते हुए उचित देखभाल एवं उचित प्रबंधन, रोगो से बचाव एवं हरे चारे देकर वैज्ञानिक एवं व्यवस्थित ढंग से पशुपालन किया जाये।

दुधारु पशुओं से अधिक दुध प्राप्त करने हेतु निम्न बातों पर ध्यान देना अति आवश्यक है।

(क) उन्नत नस्ल का चयन–

- दुधारु पशुओं की खरीद करते समय पशुओं की खरीद करते समय पशुपालकों को मुख्यतः संकर नस्ल की गाय या उॅची जाती कि भैंस (मुर्रा, मेंहसना) की ही खरीद करनी चाहिए।
- पहले या दुसरे वियान का ही पशु लेना चाहिए जो दो से चार दांत की हो।
- गाय की बनावट एवं शारीरिक संरचना पर ध्यान देते हुए तिकोने आकर की गाय को प्राथमिकता देनी चाहिए। अगला हिस्सा पतला एवं पिछला हिस्सा चौडा एवं भारी होना चाहिए।
- थन के दोनो तरफ पेट निचले हिस्से में एक प्रकार की शिराये होनी चाहिए।ये शिरायें जितने मोटी एवं टेढी मेंढी होगी गाय उतनी दुधारु होगी।
- दूध दूहने के बाद थन पूरी तरह सिकुड जाना चाहिए।
- थन के चारों छेनी की दुरी बराबर होनी चाहिए।
- चमडी पतली तथा चमकदार होनी चाहिए एवं योनि का निचला हिस्सा चौडा एवं उभरा होना चाहिए।

संकर नस्ल की गायः–

देशी नस्ल की गाय

- साहीवाल या मोण्टगोमरी– इसकी दुध उत्पादन क्षमता अन्य देशी नस्ल की तुलना में अधिक होती है एक वियान में तीन सौ दिनों में 2200–3200 लीटर दूध देती है।
- रेडी सिंधी– 2000–2500 लीटर दूध देती है।
- गीर– 1500– 1800 लीटर दूध देती है।
- थारपारकर– 2000 लीटर

- हरियाणा– 2000 लीटर

विदेशी नस्ल की गाय

- जर्सी– प्रति वियान 4500 लीटर
- H F- 6000–7000 लीटर
  अच्छे पालन पोषण पर 15000–18000 लीटर
- ब्राउन स्वीस

भैंस की नस्लें

- मुर्रा– 10–15 लीटर प्रतिदिन
  (पंजाब हरियाना)
- मेहसाना– 10–12 प्रतिदिन
  (गुजरात)

(ख) दूध दुहने का तरीका :–

- गाय में दुध दुहना भी एक कला है। ठीक ढंग से दूध दुहने पर दूध उत्पादन में वृद्वि होती है चौबीस घंटे के अन्दर गाय के दूध निकालने का समय दो बार नियत समय पर होना चाहिए कभी कभी अधिक दूध देने वाली गाय का दूध तीन बार भी दूहते है।

(ग) दुधारु पशुओ के लिए संतुलित आहारः–

- **दुधारु गाय** के खाने में हरा चारा 15 किलोग्रम सुखा चारा 5 किलोग्रम दाना 1/2 किलोग्रम एवं खाने का नमक एक औंस प्रतिदिन। इसके अलावे हर तीन किलोग्रम दूध के लिए 1 किलोग्रम दाने का मिश्रण अधिक मिलाना चाहिए। खनिज पदार्थ का मिश्रण भी अति आवश्यक है।
- **दूधारु भैंस**– साधारणतः गाय से डेढ गुणा अधिक चारा खाती है। गाय की तुलना में मोटा चारा ज्यादा खाती है। एक साधारण भैंस के खाने में हरा चारा 20 किलोग्रम सुखा चारा 8 किलोग्रम दाना 1 किलोग्रम नमक 1 औस प्रति दिन मिलना चाहिए। इसके अलावे हर 2.5 किलोग्रम दूध पर एक किलो दाना– खल्ली अतिरिक्त देना चाहिए।
- अधिक दुध उत्पादन के लिए दुधारु पशुओ को संतुलित आहार देना अति आवश्यक है संतुलित आहार का तात्पर्य है उनके आहार में प्रोटिन, वसा, कार्बोहाइड्रेड, खनिज लवण तथा विटामीन की उचित मात्रा उपलब्ध होनी चाहिए।
- हरा चारा– बरसीम, हाथी घास, लोबिया, लुर्सन, काउपी.

नोट - दो वियान के बीच का अंतराल अगर ठीक से देखभाल किया जाये तो करीब 13–15 महीना होना है।

- दुध देने की अवधि प्रति वियान औसतन 300 दिन माना गया है।
- हरे चारे की मात्रा प्रमुखता से होनी चाहिए एवं लागत कम होनी चाहिए
- गर्मीयों में शुद्व साफ पानी की मात्रा बढानी चाहिए ।
- अधिक दुध देने वाली पशओ में गुड, शीरा व तेल जैसे पदार्थ आवश्यकता अनुसार मिलाना चाहिए। जिससे उनकी उर्जा की आवश्यकता पूरी हो सके।

(घ) दुधारु पशुओं की देख भालः–

- गर्मी व सर्दी से बचाकर उनको एक उॅचे आरामदायक स्थान पर रखना चाहिए।सर्दियों में विछावन गीला न होने दे और खिडकियॉ में बोरी आदि लगाकर ठंडी हवा से पशुओं को बचाना चाहिए। गर्मीयों में लू से बचाने हेतु 3–4 बार पानी पिलाना चाहिए और पशु के उपर पानी का छिडकाव करना चाहिए।
- आवास उॅचें स्थान पर होना चाहिए एवं हवा रोशनी एवं धूप का भरपूर आदान प्रदान होना चाहिए, फर्श पक्का होना चाहिए एवं मल मूत्र के त्वरीत निकासी की उचीत व्यवस्था होनी चाहिए। रात्रि में प्रकाश की उचीत व्यवस्था होनी चाहिए।
- आसपास पानी का जमाव नहीं होना चाहिए।
- गोशाला के आसपास छायादार पेड होना चाहिए।

(ड) दुध उत्पादन पर बिमारीयों का प्रभावः–

पशुओं में अधिक दुध उत्पादन एवं अधिक कार्य क्षमता के लिए उतम आहार एवं विशेष प्रबंध के साथ साथ स्वास्थ पर भी ध्यान देना आवश्यक है। अच्छे संतुलित भोजन एवं अच्छे देखभाल के आभाव में पशु कई बार बीमारीयों से ग्रसित हो जाते है, जिसका इनके दुध उत्पादन पर प्रतिकूल प्रभाव पडता है।

- जीवाणु (Bacterial) जनित रोग –_लगंडी बुखार, गला घोंटू , क्षय रोग थनैला ब्रुसेलोसिस एक्टिनोमाइकोसिस, एक्टिनोवेसिलोसिस
- विषाणु (Viral) जानित रोग – चेचक, खुरहा चक्का रोग (F.M.D), Blue tongue
- प्रोटोजोआ- सर्रा, एनाप्लाजमोसिस, ववेसियेासिस , थैलेरियोसिस, कॉकसीडियोसिस आदि

उपचार

पशुपालक उपचार हेतु पशु चिक्तिशक से परामर्श ले।

(च) टीका करण_(Vaccination)

- गलाघोटूं (मांस में) – वर्षा प्रारंभ होने के पूर्व टीकाकरण मई माह में प्रथम टीका एवं छः माह की आयु तक पूर्ण टीका प्रति वर्ष।

- खुरहा चक्का रोग (चमडे में)-_ प्रथम टीका छः माह की आयु तक, प्रथम तरीके के चार माह के आयु के बाद बुस्टर टीका वर्ष में दो बार फरवरी और सितम्बर महीने में देना चाहिए।
- लंगडा बुखार (चमडें के बीच)– वर्षा प्रारंभ होने के पूर्व मार्च अप्रैल माह में प्रथम टीका छः माह की आयु में, पुर्ण टीका इसके बाद प्रतिवर्ष ।
- ब्रुसेलोसिस (चमडें में) – आठ महीने के उपर के उम्र में। गर्भवती मादा में नहीं देना चाहिए।

(छ) अधिक दुध उत्पादन के लिए विटामीन सप्लीमेंट –

- Mifex oral 100 मिली लिटर प्रति दिन दस दिनो तक
- Pecutrin-(900 ग्रम का पैक) 30 ग्रम प्रतिदिन।
- Milk dhara- 100 ग्रम प्रतिदिन खाने के साथ।
- Cadisol DC- 50 मिली लिटर दिन में दो बार।
- Gomin- 25 ग्रम प्रतिदिन
- Vetkal B12- 50 मिली लिटर खाने के साथ।
- Milkmin- 28 ग्रम प्रतिदिन खाने के साथ।
- Supplivite- M- 30 ग्रम प्रतिदिन।
- कभी कभी गाय दुध चुरा लेती है। तो Leptadin Forte (100 cops Packet)- 10 cops दूध दुहने से 1/2 पहले एक महीना या 15 दिन तक–